वर्षम् - ०२ अङ्कः - ०२ शोधज्योतिः
जनवरी-दिसम्बर, २०२० ISSN-2350-0700

प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्य निरूपित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का जीवन पर प्रभाव

डॉ. साधु आत्मतृप्तदासः[१]

पूर्वभूमिका

वेदान्तपरंपरा में प्रस्थानत्रयी अर्थात् उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र तथा श्रीमद्भगवद्गीता - इन तीन ग्रंथों का महत्त्व अनन्य है। अनेक सहस्राब्दियोंसे इन पर चिंतन हो रहा है, जो वर्तमान में भी गतिमान है। वेदांतदर्शन के आधारभूत इन तीनों शास्त्रों में प्रतिपाद्य वस्तु में एकसूत्रता का निरूपण करते हुए सर्वप्रथम श्रीमद् आदि शंकराचार्यने प्रस्थानत्रयी पर व्यवस्थित रूप से भाष्यों का प्रणयन किया था, जिनमें उन्होंने अद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया। प्रस्थानत्रयीभाष्यरचना की इस परंपरा में उत्तरोत्तर रामानुजाचार्य द्वारा विशिष्टद्वैतदर्शन मध्वाचार्य द्वारा द्वैतदर्शन, निम्बाकाचर्य द्वारा द्वैताद्वैतदर्शन, वल्लभाचार्य द्वारा शुद्धाद्वैतदर्शन तथा बलदेव विद्याभूषण द्वारा चैतन्य महाप्रभु प्रेरित अचिंत्यभेदाभेददर्शन का प्रतिपादन करनेवाले स्व-स्वाभिमत अर्थनिरूपक भाष्यों का प्रणयन हुआ। किसीने तीन में से एक प्रस्थान पर तो किसीने दो प्रस्थानों पर अवश्य रचना की। इन दर्शनों के अंतर्गत कालान्तर में अन्य भाष्यग्रंथों की रचना भी विद्वानों के द्वारा होती रही। कुछ शताब्दियों से सुषुप्त हुई यह परंपरा २१वीं शताब्दी के आरंभ में पुनर्जीवित हुई, जब महामहोपाध्याय स्वामी भद्रेशदास ने नूतन दर्शन का प्रतिपादन करते हुए प्रस्थानत्रयी के तीनों शास्त्रों पर "स्वामिनारायण भाष्य" का प्रणयन किया। इन भाष्यों में परब्रह्म भगवान स्वामिनारायण द्वारा उपदिष्ट "अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन" का प्रतिपादन भाष्यकार ने किया है।

प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्य प्राचीन परंपरा का अनुसरण करते हुए सांप्रत काल में निर्मित विशिष्ट भाष्यग्रंथ है, जिनका विभिन्न दृष्टिकोण से अवलोकन किया जा सकता है। प्रस्तुत संशोधन में इन भाष्यग्रंथों द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान का मनुष्यजीवन पर क्या प्रभाव है, यह देखने का प्रयास किया गया है। "अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन" एक जीवंत तत्त्वदर्शन है, जिसके आधार पर

---

[१] प्राचार्यः, BAPS स्वामिनारायण-संस्कृत-महाविद्यालयः, सारङ्गपुरम् (गुजरातम्)

बोचासणवासी अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था की स्थापना सन १९०७[१] में हुई है। इस संप्रदाय के अनुयायी त्यागाश्रमी एवं गृहस्थाश्रमी की साधना "अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन" पर अवलंबित है। जब कोई व्यक्ति अथवा समुदाय किसी एक तात्त्विक मत का अनुसरण करता है, तब उनके आचरण एवं अनुभव पर उस मत का प्रभाव संभवित है। "अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन" का अनुसरण करनेवाले वर्ग के जीवन पर इस दर्शन का क्या विशिष्ट प्रभाव है, यह समझने का प्रयास इस शोधपत्र में किया जा रहा है।

प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्य तथा अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का संक्षिप्त परिचय

भाष्यरचना की पृष्ठभूमि

इस भाष्य की रचना परब्रह्म भगवान स्वामिनारायण (सन् १७८१-१८३०) द्वारा उपदिष्ट तत्त्वदर्शन के आधार पर हुई है। भगवान स्वामिनारायण के उपदेशवचनों का प्रधान ग्रंथ "वचनामृत" है, जो उन्हीं की उपस्थिति में चार वरिष्ठ संत मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी तथा शुकानंद स्वामी ने संपादित किया था।[२] यह ग्रंथ प्रायः वार्तालाप शैली में है, जिसमें भगवान स्वामिनारायण की तत्त्वज्ञान के गहन सिद्धांत अत्यंत सरलता से प्रस्तुत हुए हैं, जिससे कि दिन-प्रतिदिन की समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान सामान्य व्यक्ति भी समझ सके। यद्यपि इस ग्रंथ का स्वरूप, सहज और स्वाभाविक गोष्ठीमय होने के कारण इसमें प्रकरणबद्ध विषयक्रम नहीं प्राप्त होता है, तथापि इसमें भगवान स्वामिनारायण का मौलिक वेदांतदर्शन विशदता से निरूपित है।

भगवान स्वामिनारायण की आध्यात्मिक परंपरा में उनके बाद अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी (सन् १७८५-१८६७) के द्वारा इस दर्शन का प्रवर्तन हुआ। गुणातितानण्द स्वामी का उपदेशग्रंथ "स्वामीनी वातो" इस दर्शन के निरूपक आधारभूत ग्रंथों में से एक माना जाता है। इनके बाद ब्रह्मस्वरूप प्रागजी भक्त (सन् १८२९-१८९७) के द्वारा इस दर्शन का प्रवर्तन हुआ। तदन्तर ब्रह्मस्वरूप स्वामी यज्ञपुरुषदासजी (शास्त्रीजी महाराज) (सन् १८६५-१९५१) ने इस दर्शन के प्रवर्तन में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भगवान स्वामिनारायण प्रबोधित इस दर्शन का नामाभिधान

---

[१] ("BAPS Swaminarayan Sanstha")

[२] प्रथम मुक्तानन्दश्च गोपालानन्दो मुनिरुदारधीः। नित्यानन्दशुकानन्दौ चत्वारो मुनयस्तु ये ॥१॥
एतैः सङ्गत्य लिखितानीत्थं धर्मजनेर्हरेः। वचनामृतानि सर्वाणि यथामति यथाश्रुतम् ॥२॥
(Svāminārāyaṇa 634)

"अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन" उन्हीं के द्वारा किया गया।[१] उन्होंने परब्रह्म भगवान स्वामिनारयण के साथ अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा शिखरबद्ध मंदिरों में करके अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन को साकार स्वरूप दिया। इसी दर्शन का प्रवर्तन करने के लिए उन्हों "बोचासणवासी अक्षरपुरूषोत्तम स्वामिनारयण संस्था" (BAPS) की स्थापना की।

ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के अनुगामी ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज् (सन् १८७२-१९७१) तथा ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज (सन् १९२१-२०१६) ने भारत के उपरांत आफ्रिका, युरोप, नोर्थ अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया खंडों के देशों में तथा मध्यपूर्वीय अखाती देशों में मंदिरों के द्वारा तथा सत्संगकेन्द्रों के द्वारा इस दर्शन का प्रवर्तन किया। अब तक यह दर्शन विविध रूप से इस संप्रदाय के अनुयायियों के लिए नित्य साधना का विषय बन चुका था, फिर भी विद्वद्वर्ग के लिए इस दर्शन की वेदमूलकता तथा मौलिकता अस्पष्ट रही थी। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने इस दिशा में एक युगवर्ती कार्य करते हुए स्वामी भद्रेशदासजी को प्रस्थानत्रयी पर स्वामिनारायण भाष्य लिखने के लिए प्रेरित किया। सन् २००७ में १७ दिसम्बर के दिन उन्होंने दश मुख्य उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र तथा श्रीमद्भगवद्गीता - इन तीनों प्रस्थानों पर भाष्यरचना का कार्य पूर्ण करके गुरु प्रमुखस्वामी महाराज को समर्पित किया।[२]

स्वामी भद्रेशदासजी ने भगवान स्वामिनारायण द्वारा "वचनामृत" में उपदिष्ट तत्त्वज्ञान को साथ लेकर उसके प्रकाश में तीनों प्रस्थानोण् का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया है। इसी आधार पर सप्रमाण युक्तियुक्तापूर्व अर्थों का उद्घाटन करके प्रस्थानत्रयी में से "अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन" का सूत्र निकाला है। भाष्यकार ने अपने नहीं, किन्तु भगवान स्वामिनारायण के तत्त्वदर्शन को प्रस्तुत किया है, अतः इन भाष्यों का नामाभिधान "स्वामिनारायण भाष्य" किया गया है।

प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्य में निरूपित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन को प्रकरणक्रम से वादग्रंथ के रूप में संग्रहीत करके स्वामी भद्रेशदासजी ने "स्वामिनारायणसिद्धान्तसुधाः परब्रह्मस्वामिनारायणप्रबोधितम् अक्षरपुरुषोत्तमदर्शनम्" का प्रणयन् किया, जिसका प्रकाशन सम् २०१७ में हुआ है। यह वादग्रंथ अक्षरपुरुषोत्तमदर्शन को पूर्णतया समझने में अत्यधिक उपकारक है।

---

[१] (Bhadreshdas, *Parabrahma Swaminarayan Prabodhit Akshar-Purushottam Darshan Parichaya* 66)

[२] (Aksharavatsaldas 80)

अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन की ध्यानार्ह विशेषताएँ

अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन में पाँच अनादि तत्त्वों का स्वीकार किया गया है। ये पाँच तत्त्व हैं : जीव ईश्वर, माया, अक्षरब्रह्म और परब्रह्म।[१]

जीवस्तथेश्वरो माया ब्रह्म परब्रह्म च।
नित्याः सत्याः सदैवैते मिथो भिन्नाः स्वरूपतः॥[२]

इनमें से अक्षरब्रह्म तथा परब्रह्म अनादि से मायापर दिव्य चैतन्य तत्त्व है। जीव तथा ईश्वर अनंत हैं, जो अनादि से मायाबद्ध हैं। जीव तथा ईश्वर जब अक्षरब्रह्म का साधार्म्य पाते हैं और परब्रह्म की उपासना करते हैं तब उनकी मुक्ति होती है। परब्रह्म भगवान स्वामिनारायण हैं और उनके मुख्य उपासक अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी हैं। अक्षरब्रह्म, गुरुपरंपरा के रूप में प्रकट रहते हैं, जिनमें परब्रह्म सम्यक्त्या विराजमान होते हैं, अतः उनके परब्रह्म का प्राकट्य पृथ्वी पर रहता है। अक्षरब्रह्म गुरु साधक के लिए साधना का आदर्श भी है। ऐसे गुरु के सेवन से ब्रह्मभाव को प्राप्त कर परब्रह्म की उपासना करना साधक का लक्ष्य है। जब अक्षरब्रह्म गुरु तथा परब्रह्म की कृपा से जीव ब्रह्मरूप होता है, तब भी अक्षरब्रह्म के गुणसाधर्म्य को प्राप्त करने के बावजुद स्वरूपतः उसका अस्तित्व बना रहता है और परब्रह्म के प्रति स्वामीसेवकभाव भी बना रहता है। इस दर्शन की इस शोधपत्र में उपयोगी कुछ विशेषताओं पर ध्यान दें।

अक्षरब्रह्म तथा परब्रह्म तत्त्व का भेद

विद्वानों के लिए प्रथम दृष्टि में ही अन्य दर्शनों से विलक्षणता प्रदर्शित देनेवाली इस दर्शन की अन्यतम विशेषता है अक्षरब्रह्म तथा परब्रह्म - इन दो तत्त्वों का भेद। यहाँ अक्षरब्रह्म के लिए "अक्षर" तथा परब्रह्म के लिए "पुरुषोत्तम" शब्द का भी प्रयोग किया गया है। अक्षरब्रह्म तथा परब्रह्म के बीच क्या सम्बन्ध है, यह बताने के लिए भगवान स्वामिनारायण ने कहा है,

"ब्रह्म प्रकृतिपुरुष आदि सर्व का कारण हैं और आधार हैं और अंतर्यामी शक्ति से सर्व में व्यापक हैं... और उस ब्रह्म से परब्रह्म पुरुशोत्तमनारायण भिन्न हैं और ब्रह्म के भी कारण हैं और आधार हैं और प्रेरक हैं।"[१]

---

[१] "गढडा प्रथम प्रकरण ७" (Svāminārāyaṇa 8)

[२] कारिका ३ (Bhadreshdas, Svāminārāyaṇasiddhāntasudhā 9)

यहाँ पर ब्रह्म शब्द से अक्षरब्रह्म तत्त्व का निर्देश करके परब्रह्म को उससे परे बताया गया है। प्प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्यों में ऐसा भेद प्रदर्शित करनेवाले कुछ अंश निम्ननिर्दिष्ट हैं।

अक्षरात् परः परः ।
"ब्रह्मणोऽपि परत्वात्परब्रह्मेति परमात्मात्मनोऽन्वयर्थैव संज्ञा।
अक्षरब्रह्मणश्च तत्परभूतपरमात्मानं विहायैव, तदतिरिक्तेभ्यः
सर्वेभ्यो यत्परत्वं तदपि परमात्मेच्छायत्तमेति सिद्धम्।"[२]

यस्मात क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चित्तमः।
"अत्र 'अक्षरादपि' इति अपिकरणेन बद्धमुक्तजीवेश्वरादि -
सर्वोत्कृष्टाक्षरब्रह्मणोऽपिपुरुषित्तमस्योत्तमत्वोक्त्या
तन्निरवधिक-परशक्तिसामर्थ्यविभवः सूचय्यते।"[३]

एतद् वै सत्यकाम परं चाऽपरं ब्रह्म।
"परमिति विशेषणस्य ब्रह्मेत्यत्रान्वये परमात्मनो ग्रहणात्
पुनरक्षरब्रह्मणोऽपि ग्रहणार्थमपरमिति विशेषणान्तरोपादानाम्।
परब्रह्मणश्च न्यूनत्वादप्यपरं भवत्यक्षरं ब्रह्म।"[४]

इस दर्शन में साधक का लक्ष्य अक्षरब्रह्म के साथ अपने जीवात्मा की एकता मानकर परब्रह्म के प्रति स्वामिसेवकभाव से दासत्व सिद्ध करना है।

भगवान स्वामिनारायण ने कहा है, "अपने जीवात्मा की ब्रह्म के साथ एकता करके परब्रह्म की स्वामीसेवकभाव से उपासना करना - इस प्रकार से समझे तब ब्रह्मज्ञान भी परमपद प्राप्त करने का निर्विघ्न मार्ग है।"[५] प्रस्थानत्रयी भाष्य में यह सिद्धांत इस प्रकार प्रस्थापित किया गया है -

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्॥

---

[१] "गढडा मध्य प्रकरण ३" (Svāminārāyaṇa 356)

[२] मुण्दकोपनिषत् २/१/१ (Bhadreshdas, Īśādyaṣṭopaniṣatsvāminārāyaṇbhāṣyam 260)

[३] श्रीमद्भद्वद्गीता १५/१८ (Bhadreshdas, Śrīmadbhagavadgītā Svāminārāyaṇbhāṣyam 316)

[४] प्रश्नोपनिषत् ५/२ (Bhadreshdas, Īśādyaṣṭopaniṣatsvāminārāyaṇbhāṣyam 215)

[५] "गढडा मध्य प्रकरण ३" (Svāminārāyaṇa 356)

"परमात्मपराभक्तिः स्वात्मब्रह्मरूपत्वसम्पत्तिं विना मुमुक्षुभिः
नैवाऽऽपादितुं शक्या इति सिद्धान्तितम्।"[१]

स्वयं अक्षरब्रह्म भी दासभाव से परब्रह्म की उपासना करते हैं।

उपास्योपासकत्वं स्यात् सम्बन्धो दासभावतः।
परं ब्रह्म सदोपास्यम् अक्षरं तदुपासकम्॥[२]

परब्रह्म का अक्षरब्रह्म गुरु के रूप में अखंड प्राकट्य

परब्रह्म भगवान स्वामिनारायण के उपदेश में प्रकटस्वरूप का साधना में अनिवार्यरूप से मत्त्व बताया गया है। जैसे कि,

"जैसा परोक्ष भगवान के रामकृष्णादिक अवतार का माहात्म्य समझाता है तथा नारद, सनकादिक, शुकजी, जडभरत, हनुमान, उद्धव इत्यादिक परोक्ष साधु का जैसा माहात्म्य समझता है वैसा ही प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवान के भक्त साधु का माहात्म्य समझे तो उसे कल्याण का मार्ग में कुछ भी समझना बाकी नहीं है।... यह वार्ता एक बार कहने पर समझो या लाख बार कहने पर समझो, आज समझो अथवा लाख वर्ष के बाद समझो, परंतु यह बात समझने पर ही छुटकारा है।"[३]

यहाँ पर प्रत्यक्ष भगवान के स्वरूप की महिमा समझना अनिवार्य बताया गया है। इसी से यह फलित होता है कि इस दर्शन में "भगवान का प्राकट्य सदा रहेगा" यह सिद्धांत भी निश्चितरूप से स्वीकार किया गया है।

"जीव को जब भरतखंड में मनुष्यदेह मिलती है, तब भगवान के अवतार या भगवान के साधु अवश्य पृथ्वी पर विचरते होते हैं,

---

[१] श्रीमद्भद्वद्गीता १८/५४ (Bhadreshdas, Śrīmadbhagavadgītā Svāminārāyaṇbhāṣyam 316)

[२] कारिका ३६(Bhadreshdas, Svāminārāyaṇasiddhāntasudhā 41)

[३] "गढडा मध्य प्रकरण २१" (Svāminārāyaṇa 405)

उनकी जब उस जीव को पहचान होती है तब भगवान का भक्त बनता है।"[१]

प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्य में अक्षरब्रह्म गुरु के द्वारा परब्रह्म के सदा प्राकट्य का यह सिद्धांत निम्ननिर्दिष्ट वचनों में पाया जाता है।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥
अक्षरब्रह्मणि परब्रह्मणः शाश्वतं प्राकट्यमुदबोधतया
भविष्यत्प्रयोगेण ब्रह्मविद्यासम्पत्त्यै परब्रह्मप्रत्यक्षतया
प्रकटनारायणस्वरूपभूतस्य ब्रह्मस्वरूपगुरोरनिवार्यता सिद्धान्तिता।"[२]

समाने एवं चाऽभेदात्
"शरीरधारणादिनोपासकजनकसजातीयभूते गुरूरूपे
प्रत्यक्षहब्रह्मणि स्वात्मनोऽभेदेनाऽनुसन्धानात्
तदनुसन्धानतुरात्मन्यपि यथोक्तब्रह्मात्मैक्य-लक्षणात्मगृहीति
सिध्यतीति। ब्रह्मस्वरूपं गुरुं प्राप्य तत्प्रकृष्टमननाद्यनुष्ठानेन
नैकेषां ब्रह्मभावाऽऽप्तिः सम्प्रदायसिद्धा।"[३]

इस प्रकार वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल में भी परब्रह्म का प्राकट्य सदैव रहेगा, यह सिद्धांत इस दर्शन की अद्वितीय विशेषता है।

अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का प्रभाव : जीवन पर

शास्त्रवचनों के आधार पर, सटीक युक्ति से सिद्ध किये गये तत्त्वदर्शन की सार्थकता है - जीवन पर इसके प्रभाव से। जब किसी सिद्धांत को सत्य मानकर उसका श्रवण, मनन एवं निदिध्यास किया जाता है तब व्यक्ति के आचरण पर एवं अनुभव पर इसका प्रभाव अवश्य पडता है।

वर्तमान काल में अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का अनुसरन करनेवाले अनुयायीगण में निम्ननिर्दिष्ट सिद्धांतो के प्रति अविचल निष्ठा पाई जाती है। यह निष्ठा उनके आचरण तथा अनुभव का मूलतः परिवर्तन करती हैं।

---

[१] "वरताल प्रकरण १९" (Svāminārāyaṇa 531)

[२] श्रीमद्भद्वद्गीता ४/३४ (Bhadreshdas, Śrīmadbhagavadgītā Svāminārāyaṇbhāṣyam 110)

[३] ब्रह्मसूत्र ३/३/१८ (Bhadreshdas, Brahmasūtrasvāminārāyaṇbhāṣyam 326)

१. परब्रह्म भगवान स्वमिनारायण अक्षराधिपति पुरुषोत्तम सर्वोपरि तत्त्व हैं। गुणातीतानंद स्वामी अक्षरब्रह्म हैं। प्रकट सत्पुरुष (अभी महंतस्वामी महाराज) प्रकट अक्षरब्रह्म हैं। उनके रूप में परब्रह्म की प्रत्यक्ष प्राप्ति हुई है।

२. आत्मा शरीर से भिन्न है, ऐसा मानकर साधक को अपने आत्मा की अक्षरब्रह्म के साथ एकता करनी है।

३. आत्मा की अक्षरब्रह्म के साथ एकता मानते हुए, स्वयं को ब्रह्म स्वरूप मानते हुए भी परब्रह्म के प्रति दासत्व बना रहता है।

४. प्रकट गुरुहरि अक्षरब्रह्म सत्पुरुष मोक्ष के दाता हैं, उनकी प्रसन्नता को भगवान की प्रसन्नता मानकर, उसीको लक्ष्य बनाकर साधना की जाती है। हरेक क्रिया में कैसे भगवान तथा गुरु की प्रसन्नता हो यही लक्ष्य रहता है।

५. भगवान सत्पुरुष के रूप में प्रकट हैं, एसा मानकर उनके भक्तों के प्रति भी महिमादृष्टि रखी जाती है। उनके रति दिव्यभाव तथा दासभाव को साधना में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है।

उपर्युक्त जीवनभावनाएँ भक्त की कक्षा के अनुसार न्यूनाधिकमात्रा में हो सकती हैं, परंतु इन मूल्यों को सार्वत्रिक रूप से महत्त्व दिया जाता है। यहाँ हम ऐसी वास्तविक घटनाओं का अभ्यास (case study) करेंगे, जिसमें इस तत्त्वदर्शन का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसे समझने का प्रयास करेंगे।

अभ्यास १ - स्वामी संतवल्लभदासजी, सारंगपुर, गुजरात् (देहांत - १३ जनवरी, १९९३)

यह एक वरिष्ठ संत थे, जो सारंगपुर स्थित BAPS स्वामिनारायण मंदिर में रहते थे। जीवनभर अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का अनुसरण करते हुए साधना में उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त इस संतवर्य के जीवन की पवित्रता तथा ज्ञानदृष्टि सभी के लिए आदर का स्थान बनी रही। परंतु जीवन के अंतिम चरण में शरीर की गंभीर बीमारी के समय में उनकी धीर और प्रसन्न प्रतिमा से सभी को उनकी देहातीत स्थिति का अनुभव हुआ।

दिनांक २३ जनवरी, १९९२ के दिन रात के समय में उनको हृदयरोग का तीव्र हमला हुआ। प्रमुखस्वामी महाराज अपना विचरण छोड़कर सारंगपुर आ पहुँचे। शरीर की अति कष्टमय स्थिति में उनके मुँह से निकल रहे शब्दों में - इस दर्शन के सिद्धांतों का साक्षात्कार देखा जासकता है। यहाँ पर प्रमुखस्वामी महाराज के साथ हुए उनके वार्तालापों के कुछ अंश प्रस्तुत हैं।

- "आप के दर्शन हो गये तो अक्षरधाम में ही बैठे हैं।... जब अपने आपको अक्षररूप मानें तो आना-जाना क्या रहा?"
- "आप जैसे पुरुष ने दयादृष्टि रखी है, इसलिए कोई अपूर्णता नहीं है।"
- "काशी तक वृत्ति फैली हो, वहाँ से वरताल तक... वहाँ से देह में... इन्द्रियों के गोलोक में... (इस तरह आत्मा में स्थित परमात्मा के साथ वृत्ति संलग्न हो जाये तब आत्मज्ञान की सर्वोच्च अवस्था सिद्ध होती है, वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण ६२ के इस उपदेश का उल्लेख करने के आशय से वे बोले) आप जैसे संत में वृत्ति रही तो सब कुछ हो गया।"
- "टट्टु दूबला है, असवार तो ताजा है। मर कहाँ जाना है? इस घर में से निकलकर इस घर में (प्रमुखस्वामी महाराज की ओर निर्देश करके) जाना है।"
- "आपकी दया से सुखी हूँ। आप ले जाएँ तो भी चिंता नहीं और अगर रखें तो भी चिंता नहीं है।"
- (आसपास खड़े संतिं को संबोधित करते हुए) "सभी एक बात सुनना। एक बात कहना चाहता हूँ। हमने श्रीजी महाराज और गुणातीतानंद स्वामी की २००वीं जयंती मनाई। शास्त्रीजी महाराज की १००वीं जयंती मनाई। योगीजी महाराज की १००वीं जयंती मनाने जा रहे हैं। ऐसी हजारो जयंतियाँ मनाएँ, लेकिन वे महापुरुष हमें मार्गदर्शन करने नहीं आयेंगे। वे सब इस पुरुष (प्रमुखस्वामी महाराज) के द्वारा प्रकट है, तो उनके आदेश अनुसार जीवन बने, ऐसा करना। दुर्लभ में दुर्लभ सत्संग और यह शरीर। इससे भी दुर्लभ ऐसे पुरुष के द्वारा एकान्तिक धर्म सिद्ध करना - इसलिए सोच-समझकर एकान्तिक धर्म सिद्ध कर लेना।"[१]

जीवन के अंतिम समय में बोले गये इन वचनों में हमें पूर्णकामता, कृतार्थता, जीवन से अनासक्ति, मृत्यु के भय का अभाव, आत्माकार दृष्टि, प्रत्यक्ष सत्पुरुष को अक्षरब्रह्म सनझना, उनमें विराजमान परमात्मा के दर्शन से धन्यता का अनुभव करना, स्वयं को अक्षरपुरुषोत्तम मानने के कारण आने-जाने के वादों से परे जीतेजी परमपद की प्राप्ति मानना, ये सब अक्षरपुरुषोत्तमदर्शनप्रोक्त तत्त्वज्ञान की सिद्धि के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

---

[१] *(Pramukh Swami Maharaj Vicharan report January 1992 8805-28)*

अभ्यास २ - निरल पटेल (शिकागो, यु.एस.ए.) (१९८२-२०१८)

निरल की उम्र २ महीनेकी थी, तब वह किडनीकी असाध्य बीमारी का शिकार बन गया। इस रोग को Polycystic Kidney Disease कहते हैं, जिसमें किडनी का कर्य अनियमित हो जाता है। यह बीमारी बढती चली। १५ महीने की उम्र में किडनी निकाल देनी पडी और डायालिसीस पर जीवन शुरू हुआ। इसके बाद किडनी ट्रान्सप्लान्ट किया गया, जो १० महीने में फेल हो गई। इस तरह ३५ वर्ष की उमर में ७३ गंभीर शस्त्रक्रियाओं के बाद जब उनकी जीवननौका डूबने की तैयारी में थी, तब भी निरल मन से बिलकुल स्वस्थ रहे थे।

बचपन से BAPS के सत्संग में पले इस् अयुवान ने इस दर्शन के तत्त्वों को किस प्रकार आत्मसात् किये थे, वह मृत्यु के १२ धंटे पहले उनके साथ हुए एक वार्तालाप से समझने का प्रयास करें। कनुभाई बारोट नामक BAPS संस्था के एक कार्यकर्ता का निरल के साथ हुआ वार्तालाप यहाँ प्रस्तुत है।

कनुभाई - "तुम अक्षरधाम में जाओगे, ऐसा तुमको किसने बताया?"

निरल - "महंतस्वामी महाराज और प्रमुखस्वामी कहाराज ने। यदि नियमधर्म का पालन करे तो जा सकते है।"

प्रश्न - "तुम अक्षरधाम में जाओगे तो हम सबको याद करोगे?"

उत्तर - "नहीं"

प्रश्न - "क्यों"

उत्तर - "वापस आना पड़े... (जन्म-मरण के) फेरे करने पड़े... ऐसा नहीं करना है।"

प्रश्न - "कुटुंब को छोडकर जाना है, तो तुम्हें दुःख नहीं होता?"

उत्तर - "प्रमुखस्वामी का जो सुख है, वह अनंत गुनाह अधिक है।"

प्रश्न - "७०-७२ सर्जरी तुम पर हुईं। तुम भगवान पर इतना विश्वास रखते हो, फिर भी तुम्ही को इतना दुःख क्यों आया? ऐसा विचार मन में नहीं आता?"

उत्तर - "मुझमें कोई कमी होगी... (इसलिए दुःख आये हैं।) पेट ले लिया, (जिससे) अनीति का कुछ खा न सकूँ। बाद में यह कान ले लिया. जिससे गालियाँ, किसी के अवगुण की बातें सुनने में न आयें। यह एक कान रखा है, भजन के लिए। हाथ अच्छा रखा है, माला घुमाने के लिए। तो फिर और क्या चाहिए?"

प्रश्न - "भगवान ने तुम पर उपकार किया या तुम्हें दुःखी किया?"

उत्तर - "उपकार। दुःखी क्यों कहतें हो? वचनामृत पढ़ना, (उसमें लिखा है कि) जो मेरी भक्ति ठीक तरह से करेगा वह अक्षरधाम जायेगा।"

प्रश्न - "तुम्हें पक्का विश्वास है कि तुम अक्षरधाम में जाओगे?"

उत्तर - "इस बार पक्का है। अनंत जन्मों से पाप किये हैं। मेरे सब पाप समाप्त हो गये।"

प्रश्न - "तुम्हें कभी ऐसा लगता है, कि अभी दूसरा जन्म लेना पडेगा?"

उत्तर - "पहेले ऐसा लगता था। लेकिन १९२७ में में ट्राय करता था कि बापा (प्रमुखस्वामी महाराज) मुझे (इस शरीर में से) ले जायें। मैंने उन्हें कहा कि यक दुःख सहन् नहीं हो पाता। मैं रो पडा। तब (स्वामीश्री ने) अपने उत्तरीय वस्त्र में मुझे लपेट दिया... पूरा शरीर... बापा ने मुझे संभाल लिया।" (ऐसा कहते आँखो में भावाश्रु आ गये)

प्रश्न - "उस दिन से प्रतीति हो गई?"

उत्तर - "उस दिन से नहीं, परंतु इवेन्च्युअली (धीरे धीरे)।"

फिर जब पता चला कि बापा मुझे छोडकर धाम में चले गये, तब थोड़ा दुःख हुआ था। मैंने सोचा था कि हम दोनो साथ में जायेंगे, जब (न्यूजर्सी में बन रहे) अक्षरधाम को खोलेगे (उद्घाटित करेंगे) तब। मुझे आशा थी कि बापा और मैं दोनो चार वर्ष (इस दुनिया में) साथमें निकालेगें। लेकिन ९अब वे पहले चले गये तो वहाँ) मेरी जगह रखते हैं।

प्रश्न - "तुम्हें बापा की सतत याद आती है?"

उत्तर - "इसीलिए उनका फोटो सामने रखा है। महंतस्वामी की भी याद आती है। हमेशा पासमें ही हों ऐसा लगता है।"

प्रश्न - "तुम्हारी तरह हमें भी ऐसा लगें कि बापा साथ में ही है, ऐसी स्थिति करने के लिए क्या करना चाहिए?"

उत्तर - "सबकुछ छोड़ देना। स्वाग, पैसों की चिंता, घरवालों की चिंता, सबकुछ बापा, स्वामी, महंतस्वामी पर छोड़ देना। तुम अगर ऐसा करोगे, तो तुम्हें भी इस तरह (अभिनय करते हुए) I.V. डालेंगें, फिर भी कुछ लगेगा नहीं।"

प्रश्न - "हमारे लिए कुछ सीख देनी है?"

उत्तर - "आपको आँटी (कनुभाई की धर्म पत्नी) की चिंता नहीं करनी चाहिए। खाने की चिंता मत करो। पैंसो की चिंता मत करना। (माला बताकर) यह की (चाबी) है। इसे यदि फिरायें तो शांति मिले। मिनिंगफूल करनी चाहिए कि मेरे जीव का कल्याण करने के लिए करता हूँ। अगर तुम्हें श्रद्धा होगी तो अपने आप ऐसी स्थिति आएगी। प्रश्न नहीं पूछने पडेंगे। ३५-४० वर्ष से अगर सत्संग किया हो मगर यह विचार न किया तो किस काम का?"

"तुम्हारी इस बात कि हम याद रखेंगे"

"यह मेरी बात नहीं है, बापा की बात है" (सामने पूर्ति बताते हुए)[१]

मृत्यु के कुछ ही घंटे बाकी है तब, मौत को सामने देखते हुए भी युवकने जो उत्तर दियें हैं, उसमें आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति का दर्शन होता है। "अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन" दुःख के समय में कैसी शांति और स्थिरता प्रदान कर रहा है, इसका यह अद्‌भुत नमूना है।

यहाँ पर दो उदाहरणों का (case study) अभ्यास हमनें किया। दोनों व्यक्तियों में बाह्यरूप से अनेक विलक्षणताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। एक भारत से है, दूसरा पश्चिमी प्रदेश से है। एक संन्यासी है, दूसरा घर में रहनेवाला है। एक वृद्ध है, दूसरा युवान है। ऐसी अनेकानेक विभिन्नताओं के बीच् मृत्यु सामने होते हुए भी निर्भयता और पूर्णकामता का एक-सा दर्शन हमें प्राप्त होता है। यहाँ तत्त्वज्ञान केवल अध्ययन का नहीं, जीवन का अभिन्न अंग बन गया है, जो कि आचरण एवं अनुभव में प्रतिबिंबित होता है।

उपसंहार

इस शोधपत्र में हमने प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्य में निरूपित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का संक्षिप्त परिचय पाया तथा इस दर्शन का मनुष्यजीवन पर कैसा प्रभाव पड़ता है उसे भी समझने का प्रयास किया। इस तरह ग्रंथ तथा ग्रंथोक्त सिद्धांत के प्रभव का दर्शन करानेवाले जीवंत उदाहरण, दोनों को एकसाथ गेखने की चेष्टा की। तत्त्वज्ञान की उपादेयता को समझ में इन दोनों की विशिष्ट भूमिकाएँ है। तात्विक सिद्धांत को कालान्तर तक संगृहीत करने के लिए ग्रंथ की आवश्यकता होती है। स्वामिनारायण भाष्य के द्वारा चिरंतर काल के लिए अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन जिज्ञासुओं के लिए यथावत् स्वरूप में उपलब्ध रहेगा। पर्तु ग्रंथोक्त सिद्धांत की सुफलता तब तक सिद्ध नहीं होती, जब तक जीवन में आचरण और अनुभव पर उसका प्रभाव न पड़े। इस प्रकार के तत्त्वदर्शन का पोषण सत्संग से अर्थात् प्रकट अक्षरब्रह्म गुरु के संग से ही सिद्ध होता है। स्वयं भाश्यकार ने "स्वामिनारायण सिद्धांतसुधा" ग्रंथ में इस दर्शन का निरूपण पूर्ण करने के बाद उपसंहार में लिखा है,

---

[१] (Patel)

शब्देषु साधितं यद्धि सप्रपञ्चं निरूपितम्।
नैके तद्द्य जीवन्ति ग्र्युसत्सङ्गवैभवात्॥

सन्तुष्टा दृढनिष्ठातो ह्यक्षरपुरुषोत्तमे।
सत्सङ्गे बहवो दृष्टाः शास्त्रक्लेशविवर्जिताः॥

सत्सङ्गान्नाधिकं किञ्चिद् गुरुप्रङ्गलक्षणात्।
एतादृग्ग्रन्थकोटिभ्यः सत्सङ्ग उत्तमस्ततः॥[१]

इस प्रकार प्रश्तअनत्रयी स्वामिनारायण भाष्य निरूपित "अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन" के जीवन पर हो रहे प्रभाव का यहाँ पर प्रारंभिक अध्ययन हुआ है। इस अध्ययन से प्रतित होता है कि तत्त्वज्ञान के गहन सिद्धांत जनसामान्त के जीवन में किस प्रकार चरितार्थ होते हैं, यह तत्त्वज्ञान के अभ्यासी के लिए संशोधन का विषय है, जिससे दर्शनशास्त्र को समझने की नयी दिशा खुल सकती है।

सन्दर्भग्रन्थसूचिः

१. Aksharvatsaldas, Sadhu, "BAPS Shatabdi Mahotsav Ek Abhutpurva Shastriya Pradan." *Swaminarayan Prakash, vol.70, no.1, Jan.2008, p.98.*

२. "BAPS Swaminarayan Sanstha." BAPS *Swaminarayan Website*, www.baps.org. Accessed 10 Jan.2020.

३. Bhadreshdas, Sadhu. *Brahmasūtrasvāminārāyaṇabhāṣyam.* Swaminarayan Aksharpith, 2009.

४. *Īśādyaṣṭopaniṣatsvāminārāyaṇbhāṣyam.* Swaminarayan Aksharapith, 2009.

५. *Parabrahma Swaminarayan Prabodhit Akshar-Purushottam Darshan Parichay.* 2nd Ed.

६. *Śrīmadbhagavadgītā Svāminārāyaṇbhāṣyam.* 1st ed., Swaminarayan Aksharapith, 2012.

७. *Svāminārāyaṇasiddhāntasudhā*. 1st ed., Swaminarayan Aksharapith, 2017.

८. Patel, Niral. *Final Interview with Niral Patel*, 9 July 2018.

[१] (Bhadreshdas, Svāminārāyaṇasiddhāntasudhā 459)

Pramukh Swami Maharaj Vicharan Report, January 1992.

९. Svāminārāyaṇa, Bhagavāna. *Vachanamrut.* Edited by Gopalanand Swami et al., 26th ed., Swaminarayan Aksharapith, 2009.